

R. 2,112,13. जगत् Būā. P. 2,10,42. धर्मम् Spr. (II) 1514. fg. Vop. 5, 15. Jmd befestigen so v. a. unterstützen: मो चैव धृतराष्ट्रं च पूर्वमेव (so ed. Bomb.) — चित्रकार इवालेख्यं कृत्वा स्थापितवानसि (zugleich befestigen in eig. Sinne) MBh. 5,5024. fg. — 10) feststellen, festsetzen, bestimmen: वृद्धिम् M. 8,157. 261. अर्थम् Jāñ. 2,251. यथा च वः (so ed. Bomb.) स्युः पतयो ऽनुकूलास्तथा वृत्तिमात्मनः स्थापयधम् MBh. 5,901. वज्रं तथा स्थापयतां (med.) वधाप 14,270. संस्थाम् R. Gorr. 1,62,26. अवधिम् Megh. 88. लग्नदिवसम् Kathās. 73,36. समयम् Rāga-Tar. 4,617. अमारमयोदा कषपनिषाम् 5,119. गोत्रदेवत्वम् Verz. d. Oxf. H. 19, a, 3. अस्माकं तथागतज्ञानकोशे दायायम् (so ist zu lesen) Saddh. P. 4,28,a. eine Bestimmung in Betreff Jmdes (acc.) treffen: वीर्यप्रल्लेखि मे कन्या स्थापितेयम् R. 1,66,15. so v. a. einführen: वेदरक्ष्यम् MBh. 1,62. वर्त्म श्रौतम् LA. (III) 87,12. इक्ष्वागमचतुष्टयं स्थापयेत् Burnouf, Intr. 49. स्थापित = निश्चित H. a. n. 3,312. Med. t. 170. — 11) eine Behauptung —, Thesis aufstellen Comm. zu Nāṣas. 5,1,21. setzen im Gegens. zu negiren Sāh. D. 730. 329,5. — 12) machen zu, mit zwei acc.: ताः सर्वाः पुत्रिकाः स्थापयामास नष्टपुत्रः MBh. 1,2576. लङ्कायामाश्वरं भवतं स्थापयिष्यति R. 5,89,28. त्रिरुतं स्थाप्य समं शरीरम् Çvetāçv. Up. 2, 8. ज्ञानमभिमुखं स्थापय मुखम् Z. d. d. m. G. 27,28. तेन मध्यमशक्तीनि मित्राणि स्थापितानि Ragh. 17,58. सुरक्षितम् gut verwahren, — hüten Kathās. 30,113. 45,127. रक्षितं मातुलुङ्गम् 53,64. क्वां वासवदत्ताम् ver- stecken 15,21. 45,361. 61,270. प्रवृत्तम् 13,99. सज्जम् Jmd bereit sein heissen 12,46. चतुरो निपतान्वर्णास्त्वं स्थापय Matsja-P. bei Muir, ST. 1,55, N. 49. परिशेषं न नामापि स्थापयिष्यति nicht einmal den Namen wird er übrig lassen Bhāṭṭ. 8,91. — Vgl. स्थापन u. s. w.

— desid. तिष्ठासति Schol. zu P. 1,2,9. 7,4,61. 79. 8,3,61. Vop. 19, 17. verharren wollen: बाल्येन Çat. Br. 14,6,4,1.

— intens. तेष्ठीयते P. 6,4,66. Vop. 20,4.

— अति überstehen: मूलम् TBr. 3,2,9,10. sich erheben über; Meister sein; mit acc.: जनान् RV. 1,64,13. 10,60,3. भूमिम् 90,1. अतिष्ठाय वर्चसाध्यन्यान् AV. 19,33,5. Çat. Br. 4,5,2. समानान् 10,6,1,9. 13,5,1, 12,7,1,14.

— व्यति scheinbar MBh. 13,5785. fg., wo mit der ed. Bomb. व्यतिष्ठाः st. व्यतिष्ठाः zu lesen ist.

— अधि, Uebergang von स्थ in ष्ठ P. 8,3,63. fg. nebst Vārtt. mit acc. P. 1,4,46. 1) stehen —, sich stellen —, sich setzen auf, besteigen; mit loc. und acc.: रथे RV. 1,139,4. 164,2. अतिरिक्ते 2,30,3. 4,125,5. 6,45,31. 9,85,12. विद्यस्य मूर्धन् VS. 18,55. TBr. 1,1,2,6. रथम् RV. 1, 49,2. 164,3. 35,6. das Ross (so v. a. Wagen) 51,11. 163,2. हरी 6,20, 9. केशवत्ता 10,105,5. सानुं 9,86,8. 10,81,4. व्याम् 9,85,9. सिन्धुम् 10, 123,4. AV. 10,10,13. 12,1,11. VS. 6,2. अधितिष्ठेन्न केशान् M. 4,78. 132. MBh. 13,4977. शिरः पादेन चास्याकृमधिष्ठास्यामि भूतले 2,2541. स्पन्द- नम् R. 2,46,28 (44,28 Gorr.). रथो ऽध्यष्टोयत रामेण Bhāṭṭ. 17,98. शा- खिनः (acc.) केचिदध्यष्टुः 15,31. आसनम् M. 8,24. R. Gorr. 1,72,7. Ragh. 6,73 (°तष्ठै). Kathās. 49,186. Būā. P. 6,16,3. शय्याम् VP. 3,11,108. मामधिष्ठाय uf mir sitzend R. 5,36,3. एकेन हि पदा कृत्स्नां पृथिवीं सो ऽध्यतिष्ठत stand er auf der ganzen Erde, hatte er d. g. E. unter sich 1,32,14 (31,19 Schl.). stehen überh.: अद्यतिष्ठद्भुञ्जेन शतं समाः

MBh. 13,1917. — 2) seinen Aufenthalt haben in, bewohnen, sich befin- den —, stecken in: कस्मिन्ने तपो अस्याधि तिष्ठति AV. 10,7,1. पा- तालम् Ragh. 1,80. कुटीरम् Spr. (II) 2776. माधिष्ठा निर्जनं वनम् Bhāṭṭ. 8,79. अधिष्ठाय दास्यं काष्ठमिवानलः Rāga-Tar. 6,64. वितस्तिम् Būā. P. 2,6,15. श्रीजयदेवभणितमधितिष्ठतु कण्ठतटीमविरतम् Gtr. 11,9. पु- रुष उपरिष्ठात्पशून् Çat. Br. 13,3,6,4. — 3) sich (siegreich) erheben, be- meistern, höher stehen als, den Vorrang haben über (acc.): ता इन्द्रो वज्रे- णाधि तिष्ठतु AV. 2,14,4. सर्वम् 10,8,1. 13,2,31. Åçv. Gṛh. 1,24,8. यत्किं च दिशश्च चन्द्रमाश्चाधितिष्ठति Khand. Up. 5,19,2. Çvetāçv. Up. 1,3,4,11. शत्रुम् Spr. (II) 1702. Bhāṭṭ. 9,72. 16,40. उत्थानवीरः पुरुषो वागवीरा- नधितिष्ठति Spr. (II) 1199. केन द्वैपादं वृत्तेन पाण्डवानाधितिष्ठसि MBh. 3,14652. 13,2167. स्वज्ञात्यानधितिष्ठामि नन्त्राणीव चन्द्रमाः 2173. की- र्तिं प्रवृक्ष्य तेषां वै कुरुराजो ऽधितिष्ठति 17,99. सर्वाः सपत्नीः Hariv. 7848. als Führer vorangehen, anführen: मकराजदशरथस्य दारान्वसिष्ठः Uttarak. 71,2 (91,8). lenken, regieren: ऐरावणम् Hariv. 8873. MBh. 13,1876. Auch mit gen.: जङ्गनामधितस्थिरे देवे गाथिनाः Çāñk. Çr. 15, 27,5 (Ait. Br. v. l.). — 4) vorstehen, beherrschen, verwalten: एतान्या- मानेतान्यामानधितिष्ठस्व Praçnop. 3,4. महिमिमां कृत्स्नाम् R. 2,1,25 (22 Gorr., wo fälschlich अधितिष्ठन् तम् st. अधितिष्ठत्म् gedruckt ist). प्राचीमिन्द्रः Kathās. 18,60. पुरम् 124,68. Būā. P. 8,15,33. जम्बुद्वीपम् Hit. ed. Johns. 2702. स्वाराज्यम् Spr. (II) 9. साम्राज्यम् Prabh. 97,16. रा- ज्यम् Kathās. 41,55 (°तष्ठै zu lesen). besitzen: अतीन्द्रमपि माकात्म्यं राजस्तस्याधितिष्ठतः Rāga-Tar. 4,322. in den Besitz gelangen von: पारमेष्ठ्यं पदम् Būā. P. 4,8,20. धिष्ठायाम् 12,29. — 5) sich gründen auf (loc.): रायस्योषे अधिं यज्ञो अस्यात् VS. 17,54. TS. 2,1,5,2. — 6) Gebrauch machen von, anwenden: यदपराधिनाप्यनपराधयोरिव नो कृते (so lesen wir) प्रसादमधिष्ठितवान् so v. a. an den Tag legen Mālatī. 140,10. fg. absol. °ष्ठाय so v. a. mit Anwendung von, mittels Būā. 4, 6. श्रोत्रं चतुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च । अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुप- सेवते 15,9. MBh. 1,3614. Būā. P. 4,29,5. Sarvadarçanas. 154,14. fg. Burnouf, Intr. 79, N. 2. — 7) bei den Buddhisten weihen (bénir) Bur- nouf a. a. O. — 8) partic. अधिष्ठित und धिष्ठित a) in act. Bed. a) ste- hend: देवमार्गे MBh. 1,3572. पुरस्ताद्धिष्ठितः शर्वा ममासीत् 13,997. fg. पादाङ्गुष्ठाय 1,7627. 5,7349. सर्पकण्ठाय 13,867. steckend, stecken ge- blieben: दत्तात्तरधिष्ठितम् M. 5,141. अत्तरधिष्ठिताः शराः MBh. 5,7193. stehend so v. a. sich befindend: एष भारः सत्त्वतां नयः शिरसि धिष्ठितः 2,1962. ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य धिष्ठितम् Būā. 13,17. Būā. P. 1,9,42. कीर्त्यते च पदं विज्ञेयार्थमाद्या यत्र धिष्ठिताः ihren Sitz habend Verz. d. Oxf. H. 48,b,11. mit einem acc. wohnend, seinen Sitz habend in, auf Vop. 5,2. 26,129. अदितेर्गर्भम् Būā. P. 8,17,24. यानि पदानि 3,1,17. मक्तसत्त्वम् (सिंक्षुः) Spr. (II) 4264, v. l. Būā. P. 3,10,5,7. — ß) über Andern stehend, obenan stehend, den Vorrang habend Spr. (II) 42. (नदीम् सर्वप्राणभृतां तत्र जननीमिव धिष्ठिताम् MBh. 1,2867. 13,567. R. Gorr. 1,38,5. Kām. Nit. 13,2. vorstehend (einem Amte u. s. w.), vor- gesetzt: धर्माधिकरणाधिष्ठितपुरुषैः Panāt. 97,1. मारीचतपास Būā. P. 8,17,18. — γ) beruhend auf (loc.): (नमायाम्) ब्रह्म च सत्यं च यज्ञा लोकाश्च धिष्ठिताः MBh. 3,1105. R. 1,34,34. — δ) mit einem absol. verharrend in einer Lage u. s. w.: प्रेक्ष्य erblickend dastehend so v. a.